।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

य एक इत्तमुष्टुहि।। ऋग्वेद 6/45/16

जो प्रभु एक ही है, अद्वितीय है उसी की स्तुति करो

The God who alone is unperalled Adore Him, praise Him and none else.

वर्ष 36, अंक 34 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 15 जुलाई, 2013 से रविवार 21 जुलाई, 2013 तक

विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114

दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj. org/aryasandesh

वैदिक विद्वान, मनु स्मृतिकार, शिक्षाविद् डॉ. सुरेन्द्र कुमार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति मनोनीत

वैदिक विद्वान, शिक्षाविद, अनेक पुस्तकों के रचनाकार, मनुस्मृतिकार के रूप में विख्यात डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी को देश की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का कुलपति मनोनीत किया गया।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार लेखक, शोधकर्ता एवं प्रसिद्ध प्रवक्ता हं। हरियाणा सरकार के कॉलेज कैडर में 36 वर्ष सेवा करके वे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गुड़गांव, सै. 9 के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। उनके द्वारा लिखित–सम्पादित 22 पुस्तकें हैं जिनमें से 6 पुस्तकें महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के पाठयक्रम में निर्धारित हैं। मनु के प्रसिद्ध श्लोकों की खोज पर किया गया उनका शोधकार्य और भाष्य आज देश–विदेश में सर्वाधिक पढ़ा जाता है उनकी कई पुस्तकें अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, उड़ीया आदि भाषाओं में भी अनुवादित हो चुकी हैं। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में उनके दो सौ से अधिक शोधपत्र एवं अन्य रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। गुरुकुल झज्जर से प्रकाशित 'सुधारक' नाम पत्रिका का सम्पादन वे गत दस वर्ष से कर रहे हैं। 12 वर्ष तक वे कॉलेज की पत्रिका के सम्पादक रहे।

आकाशवाणी दिल्ली और रोहतक से उनके आधा दर्जन वक्तव्य प्रसारित हुए हैं। राष्ट्रीय दूरदर्शन, आस्था, आस्था भजन, साधना, सुदर्शन आदि टीवी चैनलों पर एक सौ से अधिक वक्तव्य प्रसारित हुए हैं जो अब भी जारी हैं। विश्वविद्यालयों तथा शोध संस्थाओं द्वारा आयोजित शोध गोष्ठियों में तीस से अधिक शोधपत्रों का वाचन किया है तथा भारत में आयोजित आर्यसमज के अनेक अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय महासम्मेलनों में संयोजन का कार्य किया एवं वक्तव्य दिए।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार का जन्म हरियाणा के रोहतक जिले

– शेष पृष्ठ 6 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 दिल्ली के अवसर पर घोषित आगामी सम्मेलन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2013 डरबन (द. अफ्रीका) 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013 हेतु

निमन्त्रण देने भारत पधारी प्रतिनिधि का दिल्ली में स्वागत

भारत से सैंकड़ों की संख्या में पधारने का आह्वान

विस्तृत सूचना पृष्ठ 4 पर

भारत सरकार की मांस निर्यात नीति के विरुद्ध राज्य सभा में समीक्षा याचिका (पिटिशन)

समीक्षा समिति चेयरमैन श्री भगतसिंह कोश्यारी से मिला आर्यसमाज का प्रतिनिधि मंडल

याचिका भेजने की समय सीमा बढ़ाने के अनुरोध के साथ आर्यसमाज की ओर से दिए याचिका पर सुझाव

सभी जानते हैं कि 80% हिन्दू बाहुल देश होने के बावजूद भी भारत जैसे ग्राम प्रधान देश में समाज की पूजनीया, मां के समान पोषण करने वाले गोवंश तथा अन्य पशुओं को विदेशी मुद्रा एकत्र करने के लिए, तुष्टीकरण की विभाजक नीति का अनुसरण करने के लिए कसाई खानों में निर्दयता से कत्ल किया जा रहा है, जिसके भयंकर परिणाम हैं। भारत सरकार ने मांस निर्यात नीति की समीक्षा करने के लिए राज्य सभा सांसद श्री भगतसिंह कोश्यारी जी के नेतृत्व में समीक्षा समिति का गठन किया गया, जिसके लिए राज्य सभा की ओर से जन–साधारण से रिव्यू मांगे गए।

इस सम्बन्ध में अपने विचार देने के लिए आर्यसमाज की ओर से विचार देने तथा इसकी समय सीमा बढ़ाने के लिए आर्यसमाज का प्रतिनिधि मंडल समिति के चेयरमैन श्री भगत सिंह कोश्यारी जी से मिला। उन्होंने निवेदन किया कि इस नीति के सम्बन्ध में देश की अनेकोनेक संस्थाएं अपनी याचिकाएं देना चाहती हैं। हम भी आपको इस सम्बन्ध में तथ्यों सहित रिव्यू देना चाहते हैं, किन्तु याचिका पत्र देने के लिए जो समय दिया गया है, वह भारत जैसे विशाल देश, इस विषय वस्तु को देखते हुए काफी कम है। साथ ही तथ्यों को एकसाथ एकत्र करना तथा उनको लिपिबद्ध करके समिति के सम्मुख प्रस्तुत करने में कुछ समय लगना सम्भावित एवं स्वाभाविक है। इस पर श्री कोश्यारी जी ने विचार करने का अश्वासन दिया। प्रतिनिधि मंडल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, मन्त्री श्री जितेन्द्र भाटिया, दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) के अध्यक्ष श्री स्वामी सदानन्द जी एवं उनके सहायक सम्मिलित थे।

समस्त आर्यजन, आर्यसमाजें, विद्यालय एवं व्यापारिक संस्थान उत्तराखण्ड त्रासदी पीड़ितों के लिए अधिकाधिक सहायता राशि भेजें

वेद-स्वाध्याय

जुआ मत खेल

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

अक्षैर्मा दिव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः। तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः।। ऋ.10/ 34/ 13

अर्थ – हे ***(कितव)*** जुआरी ***(अक्षैः मा दीव्यः)*** जुआ मत खेल ***(कृषिमित्)*** तू खेती ही ***(कृषस्व)*** कर ***(वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः)*** खेती से उत्पन्न धन में प्रसन्न रहो और इसमें ही अपने को धन्य मानो ***(तत्र गावः)*** इस कृषि कार्य में गाय आदि पशु भी तेरे पास होंगे ***(तत्र जाया)*** उसी में पत्नी अनुकूल रहेगी ***(अयम् अर्यः सविता)*** इस प्रेरक विद्वान् या परमात्मा ने ***(तत् मे विच्ष्टे)*** मुझ उपासक के लिए कहा है कि लोगों को ऐसा उपदेश दो।

इस सारे सूक्त में जुए से होने वाली हानियों को बताकर फिर खेती या अन्य परिश्रम करने के कार्य से धन कमाने का उपदेश दिया है।

बिना परिश्रम के धन प्राप्त करना सभी जुआ ही समझना चाहिए। आजकल जो लाटरी, चिटफण्ड, सट्टा बाजार, स्टाक, शेयर दलाली आदि चल रहे हैं वे जुआ ही समझने चाहिएं।

जुआ एक व्यसन है। यह जिसे लग जाए वह चाहता हुआ भी इससे छुटकारा नहीं पा सकता। वह सायंकाल लुट–पिट कर घर आता है और आगे न खेलने का निश्चय करता है परन्तु संकल्प की न्यूनता के कारण अगले दिन फिर उसी मंडली में जा बैठता है। उसकी पत्नी उसे बहुत समझाती है और अन्त में उसे छोड़ मायके चली जाती है अथवा वह उसे मार–पीट कर भगा देता है। जुआरी की सास उसका सम्मान नहीं करती। उसकी दशा थके–मांदे और बूढ़े हुए घोड़े जैसी हो जाती है जिसे पहले दाना–पानी, मालिस और सेवक मिलते थे, अब उसकी कोई सुध नहीं लेता।

अपनी मनोव्यथा को प्रकट करता हुआ वह कहता है – कल मैंने संकल्प किया था कि आगे से जुआ नहीं खेलूंगा परन्तु मेरे साथी मुझ पर दबाव डाल कर खेलने के लिए विवश करते हैं। जब ये चमकते हुए जुए के पाशे फेंके जाने पर शब्द करते हैं तो व्याभिचारिणी स्त्री की भांति मुझसे रहा नहीं जाता। जुआरी की छोड़ी हुई पत्नी वियोग के कारण दुःखी रहती है। उसकी माता की भी यही स्थिति होती है। ऋण से ग्रस्त होकर वह रात्रि में दूसरे के घर में चोरी करने के लिए जाता है। मात, पिता एवं भाई भी राजकर्मचारियों को घर आए देखकर कहते हैं कि हम इसे नहीं जानते। आप इसे ले जाइए।

ये जुए के पाशे यद्यपि नीचे फेंके जाते हैं परन्तु सबको दबा लेते हैं। जब चौपट बिछ जाती है तो फिर कोई कितना भी अपने आप को तीसमार खां मानें, ये उसके क्रोध को भी शान्त कर देते हैं। ***राजो चिदेभ्यो नम इत् करोति*** *(ऋ० 10/34/8)* राजा भी इनके आगे झुक जाता है। राजा नल की जुआ खेलने से जो दुर्गति हुई वह वर्णनातीत है। उसका सारा राज्य उसके भाई पुष्कर ने छीन लिया। पत्नी समेत बनों में भटकता रहा और एक समय आया जब पत्नी भी उससे छूट गई और उसे किसी राजा के यहां भृत्य का काम करना पड़ा। इस कथा को विस्तार से महाभारत में नलोपाख्यान में पढें।

युधिष्ठिर कहने को तो धर्मराज थे परन्तु थे परले सिरे के जुआरी। यदि कोई उन्हें जुआ खेलने कर आह्वान करे तो फिर उससे मना करना सम्भव नहीं था। इसी दुर्बलता को जानकर कौरवों की चाण्डाल चौकड़ी ने उन्हें अपने यहां बुलाया और जुआ खेलने के व्याज से युधिष्ठिर का सारा राजपाट छीन लिया। इससे अधिक निर्लज्जता क्या होगी कि अपनी पत्नी को भी दाव पर लगा दिया। द्रोपदी की कौरवों की भरी सभा में जो दुर्दशा हुई उसे वाणी वर्णन नहीं कर सकती। भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य भी मूक दर्शक बन इस सारे कुकृत्य को देखते रहे। गांधारी को जब इस बात का पता चला तो उसने सभा आकर सबको फटकार लगाई और पांडवों को कहा कि जाओ इन्द्रप्रस्थ में अपना काम सम्भालो। परन्तु हाय रे दुर्दैव! इतना अपमानित होने पर भी दूसरी बार बुलावा जाने पर युधिष्ठिर फिर जुआ खेलने गया और 12 वर्ष का वनवास तथा तेरहवें वर्ष में अज्ञातवास की सौगात लेकर लौटा। इसीलिए वेद कहता है – **अक्षैर्मा दीव्य** – जुआ मत खेलो। यह निकृष्टतम कार्य है। यदि तुम्हें धन ही चाहिए तो मैं उपाय बतलाता हूं– **कृषिमित् कृषस्व** खेती करो अथवा अपने पुरुषार्थ से कोई दूसरा कार्य प्रारम्भ करो।

परन्तु स्मरण रहे **उत्तम खेती मध्यम बान निकृष्ट चाकरी भीख निदान** खेती करना सर्वोत्तम कार्य है, दूसरा स्थान व्यापार का, सेवा या नौकरी निकृष्ट अर्थात् तीसरे स्थान पर तथा किसी से भीख मांगना अत्यन्त घृणित कार्य है।

कृषि सात्विक कार्य है जिसमें कोई धोखाधड़ी या छल–कपट नहीं है। यह भूमिमाता कितनी उदार है जो एक दाना उसमें डालने पर उसे शतगुणा–सहस्रगुणा करके देती है।

हे मानव! **वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः** जो तुझे खेती से अन्न मिलता है अथवा दूसरे खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं, उन्हीं को बहुत मानकर प्रसन्न रहो। अधिक निन्यानवें के फेर में पड़ना बुद्धिमानी का कार्य नहीं है। इस खेती कार्य से **तत्र गाव तत्र जाया** तुम्हें गोधन की प्राप्ति होगी। जिसके घी–दूध–दही से तेरा सारा परिवार आनन्द मनाएगा और तेरी पत्नी भी अहर्निश गृहकार्य, पशुओं की सेवा और खेती के कार्य में संलग्न हो अपने को सौभाग्यवती मानेगी। इसलिए **तन्मे विच्ष्टे सवितायमर्यः** सबके हितैषी उस सविता देव ने मुझे यह प्रेरणा दी है कि तुम लोगों को समझाओ कि जुआ–सट्टा या दूसरे अवैध कार्यों से धनप्राप्ति करने को छोड़ कृषि कार्य अथवा अन्य उद्योग धन्धों को प्रारम्भ करो जिसमें तुम्हें पसीना बहाने से धन प्राप्त हो। याद रखो मेहनत की कमाई ही सुख देती है। चोरी का माल मोरी के रास्ते से जाता है।

– क्रमशः

आर्यसमाज सुशान्त लोक गुड़गांव
श्रावणी पर्व
21 जुलाई, 2013
आमन्त्रित विद्वान
डॉ. वागीश आचार्य जी (वैदिक विद्वान्)
श्री जगत वर्मा जी (भजनोपदेशक)
सम्पर्क – 9910776492, 9818418744

स्पष्टीकरण

साप्ताहिक आर्यसन्देश के अंक दिनांक 1 जुलाई से 7 जुलाई, 2013 के अंक में पृष्ठ 2 पर प्रकाशित सूचना **'विशेष सूचना'** जिसमें श्री कुलदीप आर्य की सेवाएं तत्काल समाप्त होने की सूचना प्राकशित की गई है, का श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर) से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है।

सभा द्वारा जिन श्री कुलदीप आर्य की सेवाएं समाप्त की गई हैं, वे सभा के प्रचार वाहन पर भजनोपदेशक के रूप में सेवारत थे। दोनों भजनोपदेशकों के नाम एक ही होने से सुधी पाठकों, उनके चाहने वालों तथा श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर) को जो असुविधा हुई, उसके लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है।

– विनय आर्य, महामन्त्री एवं सहसम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वैदिक प्रकाशन विभाग

प्रकाशित वैदिक साहित्य पर भारी छूट

अनु.	साहित्य	मूल्य
1.	सत्यार्थ प्रकाश 18 भाषाओं में (सीडी)	30/–
2.	महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थ (सीडी)	30/–
3.	शेख चिल्ली और लाल बुजक्कड (सीडी)	30/–
4.	पारिवारिक सुखशान्ति एवं समृद्धि के लिये यज्ञ करें (सीडी)	30/–
5.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	30/–
6.	सत्य की राह (सीडी)	30/–
7.	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की 5 सी.डी. का सैट	100 /–
8.	वैदिक विनय	150/–
9.	गुरुदत्त विद्यार्थी – हिन्दी / अंग्रेजी	80/–
10.	दयानन्द लघुग्रंथ सग्रंह	70/–
11.	उपनिषदों की कहानियाँ	60/–
12.	शगुन लिफाफा सिक्केवाला	400 /– सैंकड़ा
13.	शगुन लिफाफा बिना सिक्केवाला	300 /– सैंकड़ा
13.	नैतिक शिक्षा एवं व्यवहार कुशलता	200/–
14.	नेम स्लिप (1×21)	10/–
15.	समस्त कॉमिक्स	25 से 35/–
16.	अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि	50/–
17.	वेद भाष्य (घूड़मल प्रकाशन)	5000/–
19.	सत्यार्थ प्रकाश (अजिल्द)	40/–
	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	80/–
	सत्यार्थ प्रकाश (स्थूलाक्षर)	150/–

सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य पर 20 % छूट।
अन्य प्रकाशनों के साहित्य पर 10% की छूट।

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

आचार्य रामनाथ वेदालंकार जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

मेरे पिता स्वतन्त्रता सेनानी, गुरुकुल भक्त स्वर्गीय लाला गोपाल राम

(मेरे गुरुकुल प्रवेश की कहानी और पिताजी का व्यक्तित्व)

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

उस समय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय गंगापार जंगल में था। वार्षिकोत्सव होते तो बड़ी धूम मचती थी। उत्सव पर रेलवे का कंसेशन टिकट भी मिलने लगा था। बड़ी श्रद्धा के साथ गुरुकुल–प्रेमी जनता मार्ग के रेत–पत्थरों की परवाह न कर कनखल से पैदल गुरुकुल जाती थी। 3–4 दिन का उत्सव श्रद्धालु लोगों का एक धार्मिक मेला होता था। पिता जी नियमपूर्वक गुरुकुल के उत्सव पर जाते थे। **एक बार उत्सव से लौट कर मुझसे पूछने लगे, तू गुरुकुल पढ़ने जायेगा?** वहां की बातें बताते हुए कहा कि वहां कसरत, तीर कमान के खेल, मोटर रोकना जंजीर तोड़ना आदि भी सिखाया जाता है। मेरे 'हां' कहने पर मानों मेरी परीक्षा लेने के लिए बोले–चौदह वर्ष तक घर आना नहीं मिलेगा। **मेरा दिल तो टूटा, पर फिर भी मैंने इन्कार नहीं किया।** उस समय मैं आर्यसमाज की पाठशाला में पढ़ता था जो पिता जी तथा नगर के कुछ अन्य उत्साही लोगों के प्रयत्न से फरीदपुर में खोली गई थी। उस वर्ष गुरुकुल न भेजकर मुझे और मेरे बड़े भाई रामावतार को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेज दिया। उन्होंने सोचा था कि काशी एक दो वर्ष पढ़कर इनकी संस्कृत की नींव पक्की हो जायेगी, फिर गुरुकुल भेज देगें। अगले वर्ष मेरे और मेरे बड़े भाई के लिए क्रमशः गुरुकुल कांगड़ी और महाविद्यालय ज्वालापुर से प्रवेश–फार्म मंगवा कर उन्हें भरकर डाक द्वारा भेज दिया। पर गुरुकुल कांगड़ी से निषेध का उत्तर आ गया कि आपका बालक प्रविष्ट नहीं किया जा सकता क्योंकि उसकी आयु 9 वर्ष की हो गई है, आठ वर्ष से अधिक आयु के बालक प्रविष्ट नहीं किये जाते हैं। पिता जी ने फिर भी हिम्मत नहीं हारी। उत्सव पर तो उन्हें जाना ही था। बरेली के डाक्टर श्यामस्वरूप कभी–कभी उत्सव पर भाषण देने जाते थे। पिता जी का उनसे अच्छा परिचय था। उनसे एक परिचय–पत्र लिखा कर पिता जी मुझे तथा मेरे बड़े भाई को लेकर हरिद्वार पहुंच गये। बड़े भाई को महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रविष्ट करा दिया।

गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता पं. विश्वम्भरनाथ जी नियम के बड़े पक्के थे। जब पिताजी मुझे लेकर उनके पास पहुंचे तो वे कहने लगे कि आपको मना लिख दिया था, फिर इस बालक को क्यों ले आये? इसका प्रवेश नहीं हो सकता है, इसे वापिस ले जाइये। डाक्टर श्यामस्वरूप का लिखा हुआ परिचय–पत्र भी कुछ काम न आया। उन्होंने लिखा था– इनका परिवार आर्यसमाज और गुरुकुल का भक्त है, बालक होनहार है, इसे अवश्य प्रविष्ट कर लिया जाय।

गुरुकुल के मुख्य द्वार के ऊपर प्रबन्ध–समिति की बैठक होने वाली थी। पिता जी मुझे साथ लिये हुए बड़ी चिंतित मुद्रा में द्वार के समीप खड़े थे। इतने में भूतपूर्व सभा प्रधान श्री राम कृष्णजी बैठक में सम्मिलित होने उधर आ निकले। उन्होंने देखा कि सादे वेश में एक भक्त टाइप का व्यक्ति बालक को लिये खड़ा है, चेहरे पर चिंता व्यक्त हो रही है, आंखें भरी हुई हैं। उन्होंने पिता जी से पूछा–आपको क्या किसी से मिलना है? सुनते ही पिता जी की आंखों से टप–टप आंसू गिरने लगे। उन्होंने उन्हें बताया कि यह मेरा बालक है, संस्कृत पढ़ा है, 9 वर्ष की आयु हो जाने के कारण मुख्याधिष्ठाताजी ने इसे प्रविष्ट करने से मना कर दिया है। मैं यही सोच रहा हूं कि क्या इसे वापिस ही ले जाना पड़ेगा। रामकृष्ण जी पिता जी से प्रभावित हुए और बोले प्रवेश–फार्म मुझे दीजिए और यहीं थोड़ी देर प्रतीक्षा कीजिए। मीटिंग में मुख्याधिष्ठाता जी टस से मस नहीं हुए थे, अड़ गये कि इस बालक का प्रवेश नहीं हो सकता, मैं नियम को नहीं तोडूंगा। पर रामकृष्ण जी की वकालत काम आई और बहुसम्मति के आगे मुख्याधिष्ठाता जी झुक गये। पिता जी को अंदर बुलाकर प्रवेश का निर्णय बता दिया गया और कहा गया कि इसकी परीक्षा दिला दीजिए तथा डाक्टरी जांच करा लीजिए।

पिता जी मुझे प्रविष्ट करा कर मेरे बड़े भाई के पास महाविद्यालय ज्वालापुर आ गये और वहां का वार्षिकोत्सव देखने लगे। पीछे मेरा दिल टूटने लगा और मैं सिर मुंडाये, पीली धोती पहने, बिना किसी से कहे चुपचाप नावों का कच्चा पुल पार कर कनखल पहुंच गया और वहां से रास्ता पूछते–पूछते पिता जी के पास महाविद्यालय ज्वालापुर जा पहुंचा। पिताजी मुझे देख हैरान हुए और मेरी इतनी तीव्र भर्त्सना की कि मैं समझ गया कि अब मैं घर वापिस नहीं जा सकता। तुरंत मुझे लेकर गुरुकुल पहुंचे और अधिष्ठाता जी को सुपुर्द कर उसी समय लौट गये। पिता जी जहां भावुक और दयार्द्र थे, वहां सख्त भी बहुत थे।

उस समय बिना विशेष कारण के छुट्टियों में भी घर जाने की स्वीकृति नहीं मिलती थी। चार वर्ष तक मैं घर नहीं गया। पांचवें वर्ष जब मैंने देखा कि मेरे बहुत से साथी दीर्घावकाश में घर जा रहे हैं तब मैनें भी पिता जी को लिखा कि मुझे भी आकर ले जाइये। पिता जी आये तो उनसे कारण लिखकर देने को कहा गया कि क्यों बालक को घर ले जाना चाहते हैं। कार्यालय में पिता जी को पता चला कि जो बालक घर जा रहे हैं उनके घर पर या तो किसी की मृत्यु हो गई है या कोई निकट सम्बन्धी मां, दादी, बाबा, चाचा, ताऊ, बहिन आदि असाध्य रोग से पीड़ित हैं। अन्यों की तरह पिता जी भी ऐसा कोई कारण बता सकते थे, पर इसके लिये वे तैयार नहीं हुए और बोले कि बालक को छुट्टी दिलाने की खातिर मैं असत्य बात नहीं कहूंगा। परिणामतः मुझे छुट्टी नहीं मिली। यह छोटी सी बात प्रतीत होती है किन्तु इसमें पिताजी के चरित्र की एक बड़ी विशेषता पर प्रकाश पड़ता है। पिता जी उस समय स्कूल–मदरसों में चलने वाली शिक्षा के थोथेपन को देख आर्यसमाज की शिक्षा–संस्थाओं से ही प्रभावित थे। अतः अपनी दो पुत्रियों (शकुन्तला और शान्ति) को उन्होंने कन्या गुरुकुल हाथरस भेज दिया।

मोटा जुलहू खद्दर का मटियाला सा सादा कुर्ता, वैसी ही चार हाथ की ऊंची धोती, कंधे पर अंगोछा, नंगे सिर, पैरों में टायर की सादी सी चप्पलें या पैर भी नंगे, दयानन्द और आर्यसमाज के भक्त, स्वदुःख सहिष्णु, पर दुःखकातर स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी, दृढ़–निश्चयी, सादा जीवन उच्च विचार के मूर्तरूप – यह था संक्षिप्त हुलिया मेरे पिता लाला गोपालराम जी का। जब स्वतन्त्रता सेनानियों को पेंशनें बांधी जा रही थीं तब आपके परिचितों ने आपको भी सरकार के पास आवेदनपत्र भेजने की सलाह दी। आपका उत्तर था कि मैंने किसी पुरस्कार की आशा से स्वतंत्रता संग्राम में भाग नहीं लिया था। अन्त तक पुरस्कार रूप में कोई वृति आपने सरकार से नहीं ली। बरेली में मुख्यमंत्री के हाथों से एक समारोह में स्वतन्त्रता–सेनानियों को जब ताम्रपत्र वितीर्ण किये जाने वाले थे तब उस समारोह में भी आप मित्रों के बहुत आग्रह करने पर ही गये। **उनकी धारणा थी कि इस तांबे के टुकड़े से आजादी के सिपाही का क्या सम्मान बढ़ता है।**

अपने प्रारम्भिक जीवन में पिता जी फरीदपुर में कपड़े की छोटी सी दुकान करते थे। बरेली से थोड़ा–थोड़ा कपड़ा उधार ले आते थे, बिक जाने पर दाम चुका कर और ले आते। एक दिन थोक–विक्रेता ने पूछा– 'आज कपड़ा कम क्यों ले रहे हैं?' बोले–आपने रुपयों का तकादा जो भेजा था। तकादा पसन्द नहीं है, जितना रूपया पास होगा उतना ही माल लेंगे। इस पर थोक–विक्रेता ने इन्हें खुली छूट दे दी और कहा– **'आगे से कभी तकादा नहीं होगा, जितना चाहें आप माल ले जायें।'** सन् 1920 में नागपुर में कांग्रेस ने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया। तब से पिता जी ने विदेशी कपड़ा न खरीदा, न बेचा। विदेशी माल न बेचने के कारण आपकी बड़ी प्रतिष्ठा होती थी।

सन् 1921 में पिता जी महात्मा गांधी की पुकार सुनकर अहमदाबाद की कांग्रेस में गये। साबरमती आश्रम भी देखा। तभी से उनकी विचारधारा कांग्रेसी हो गई और वे देश की स्वतंत्रता के पक्षधर हो गये। सन् 1922 में कलेक्टर द्वारा लगाई गई दफा 144 तोड़कर हजारों लोगों के साथ आप नकटिया ग्राम गये। घुड़सवार पुलिस द्वारा खदेड़े जाने पर बरेली आकर कुतुबखाने पर विशाल जलसा किया। 18 आदमियों सहित उन्हें गिरफ्तार करके 6 महीने की सजा सुना कर बरेली जेल भेज दिया गया। उस समय जेलों की दशा बहुत खराब थी। लोहे के बर्तन में मिर्च–तेल डाल कर पकाई हुई दाल और किरकिरी रोटी मिलती थी। रामबांस कूटना पड़ता था और पैरों में कंबलों की मलाई करनी पड़ती थी। उनके साथी सेठ दामोदर स्वरूप के पैर तो कंबल मलते–मलते घायल हो गये थे। सन् 1941 में फिर सत्याग्रह करके जेल गये और 6 महीने की सजा काटी। सन् 1942 में **'भारत छोड़ो'** आंदोलन छिड़ने पर फिर उन्हें गिरफ्तार करके चौदह महीने बरेली की सेंट्रल जेल में रखा गया। **उनके साथ गुरुकुल के वैदिक विद्वान पं. चन्द्रमणि विद्यालंकार भी थे।** वहां पिता जी और उनके साथी सन्ध्या–हवन करते और सत्संग लगाते थे, अखाड़े में कुश्ती भी लड़ते थे। पिता जी से कुछ लोग जेल में उर्दू पढ़ते थे। उर्दू के उनके शिष्य एक पहाड़ी सज्जन ने उन्हें कहा कि जेल से छूटने पर गुरुदक्षिणा स्वरूप मैं घर से आपको एक बढ़िया पश्मीने की लोई भेजूंगा। पिता जी ने उन्हें कहा कि यह समझ कर भेजना कि उसके मूल्य का मनीआर्डर भी तुम्हारे पास पहुंच जायेगा। तब उन्होंने वह उपहार भेजने की हिम्मत नहीं की।

इन जेल–यात्राओं ने पिता जी को पहले से भी अधिक देशभक्त और गरीबों का सेवक बना दिया। वे अपनी कपड़े की दुकान लड़कों पर छोड़कर स्वयं होम्योपैथी की दवायें मुफ्त बांटकर सेवा

- शेष पृष्ठ 6 पर

दक्षिण अफ्रीका से निमन्त्रण देने भारत पधारी श्रीमती भुला का दिल्ली में स्वागत

दक्षिण अफ्रीका से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन डबरन हेतु निमन्त्रण देने भारत पधारी श्रीमती भुल्ला का स्वागत करते सभा के व. उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य। इस अवसर पर दिल्ली आर्यसमाजों के अधिकारीगण

उत्तराखण्ड त्रासदी पीड़ितों के लिए पुनः राहत सामग्री रवाना

जारी है राहत साम्रगी का वितरण : टूटे रास्ते एवं खराब मौसम से परेशानी

आर्यसमाज सेवा समिति के कार्यकर्त्ता त्रासदी से प्रभावित विभिन्न स्थानों का सर्वेक्षण करते हुए।

सर्वेक्षण कार्य के दौरान रास्ते में एन.डी.आर.एफ. के साथ सहयोग करते कार्यकर्ता ।

आर्यसमाज द्वारा किए जा रहे राहत कार्यों की जानकारी ई.टी.वी. देते सेवा समिति के कार्यकर्त्ता श्री विजेन्द्र आर्य

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे –
आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली द्वारा एकत्र

111	श्रीमती उषाकिरण आर्या	5000	
112	सर्वश्री अभिनव आर्य	5000	
113	श्रीमती राज सुनेजा	5100	
114	श्रीमती अदिति अग्रवाल	1100	
115	श्रीमती सन्तोष सैनी	1100	
116	श्रीमती कश्मीरी देवी	400	
117	श्रीमती अनु एवं आदित्य शर्मा	5000	
118	पीयूष शर्मा	5100	
119	श्रीमती प्रोमिला सक्सेना	2100	
120	यशपाल जी	1100	
121	ब्रह्मदेव वेदालंकार	2100	
122	कृष्णलाल किनरा	2100	
123	सत्यपाल मल्होत्रा	2100	
124	रामलाल बत्रा	5000	
125	श्रीमती सन्तोष आहूजा	1000	
126	श्रीमती सुमित कुमार	500	
127	श्रीमती शान्ता मेंदीरत्ता	500	
128	श्रीमती भागवन्ती खुराना	500	
129	श्रीमती निर्मल वर्मा	500	
130	विजय शास्त्री	1100	
131	विनोद भाटिया	3100	
132	मुनीष गुप्ता	2500	
133	श्रीमती इन्द्रा मित्तल	1000	
134	ओ.पी. मलिक	1100	
135	श्रीमती पुष्पलता पाहुजा	500	
136	रामप्रस्थ कालोनी एब्लाक	600	
137	रामप्रकाश वर्मा	2100	
138	सुधीर आर्य	100	
139	श्रीमती सावित्री	200	
140	श्रीमती सुमन नांगिया	5000	
141	श्रीमती सत्या सचदेव	500	
142	श्रीमती मनोरमा चौधरी	2500	
143	श्रीमती मधु कुन्दरा	2100	
144	श्रीमती डिम्पल कुन्दरा	1000	
145	श्रीमती सरोज गुप्ता	200	
146	श्रीमती बत्रा	100	
147	विपिन सिंहल	1100	
148	समीर आहूजा	1000	
149	यशपाल सैनी	250	
150	सुशील गुप्ता	100	
151	बृजलाल सिंहल	1100	
152	पी.सी. गुप्ता	1100	
153	नमनप्रिय राघव	250	
154	एम.के.जैन	1100	

– क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे।

– विनय आर्य, महामन्त्री

'शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर'
अर्थात् – सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो

उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ तन-मन-धन से सहयोग करें आर्यजन

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' – खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' – खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिस बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित करके aryasabha@yahoo.com तथा dapsvijayarya@gmail.com पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके – ***विनय आर्य, महामन्त्री***

आर्यजनों के लिए शुभ सूचना

अपने आयोजनों को वैबसाइट पर प्रसारित करें

आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के तत्त्वावधान में बन रहे आर्यसमाज के आधिकारिक वैब पोर्टल **www.thearyasamaj.org** पर आर्यसमाजें/आर्यसंस्थाएं अपने आगामी आयोजनों के पैम्पलेट, सम्पन्न हो चुके कार्यक्रमों की रिपोर्ट एवं फोटो, अपनी पत्रिका, निर्वाचन समाचार, गुरुकुलो/विद्यालयों की प्रवेश सूचना अपलॉड कर सकते हैं। सूचनाएं अपलोड करने के लिए लॉगऑन करें – **www.thearyasamaj.org/quickupload** किसी प्रकार की समस्या होने पर **श्री अश्विनी आर्य मो. 9868586720** पर सम्पर्क करें। ***– विनय आर्य, महामन्त्री***

पूर्वोत्तर भारत में अखलि भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कार्यों एवं गतिविधियों का निरीक्षण

नागालैंड में आर्यसमाज की गतिविधियां पुनः आरम्भ

आर्यसमाज दीमापुर (नागालैंड) में आर्यसमाज की गतिविधियों को पुनः बढ़ाने के संकल्प को लेकर यज्ञ करते हुए श्री प्रदीप यादव जी एवं अन्य महानुभाव साथ में आश्रम के बच्चे।

स्मरण हो कि लगभग 30 वर्ष पूर्व श्री प्रदीप यादव जी के पूज्य पिता श्री जगदीश यादव जी ने ही आर्यसमाज की गतिविधियों को बढ़ाने का संकल्प लेकर इसी यज्ञशाला का निर्माण कराया था। दयानन्द सेवाश्रम संघ की मन्त्री माता प्रेमलता शास्त्री जी ने पूर्व इतिहास को स्मरण करते हुए श्री प्रदीप आर्य जी को संकल्प दिलाया कि आर्यसमाज की गतिविधियों को बढ़ाते हुए वैदिक संस्कृति से जुडे परिवारों को आर्यसमाज के साथ जोड़ें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उनसे कहा कि आर्यसमाज का कार्य मानव कल्याण का ईश्वरीय कार्य है इसे करना अपने आप में ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने जैसा है। अतः आप आर्यसमाज का कार्य नागालैंड में बढ़ाएं, सार्वदेशिक सभा इस कार्य में आपका पूर्ण सहयोग करेगी। इस अवसर पर श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, नरेन्द्र नारंग जी एवं दीमापुर आर्यसमाज के आचार्य की भूमिका निभा रहे आचार्य सन्तोष शास्त्री एवं श्री जीववर्धन जी भी उपस्थित थे।

'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन धनश्री (आसाम)' के निर्माण कार्य का निरीक्षण

उत्तर पूर्वी क्षेत्र में दयानन्द सेवा श्रम के आश्रमों एवं उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए मील का पत्थर माने जा रहे **'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन धनश्री'** के भवन निर्माण के कार्य का निरीक्षण करते इं. श्री नरेन्द्र नारंग, विनय आर्य जी एवं स्थानीय पदाधिकारियों के साथ श्री जोगेन्द्र खट्टर जी। स्मरण रहे कि यह विद्यालय दयानन्द सेवाश्रम की पूर्वोत्तर में चल रही समस्त गतिविधियों का केन्द्र रहेगा और वैदिक संस्कृति एवं शिक्षा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

दयानन्द सेवाश्रम संघ को वाहन भेंट

उत्तरपूर्व में चल रहे कार्यों को ओर गति देने के लिए रांची के आर्य नेता एवं दयानन्द सेवाश्रम संघ के अनन्य सहयेगी श्री शत्रुघ्न आर्य जी ने एक टाटा सूमो गाड़ी भेंट की। बोकाजान आश्रम में गाड़ी के साथ माता प्रेमलता शास्त्री, जोगेन्द्र खट्टर एवं वाहन चालक जो रांची से गाड़ी चलाकर वहां पहुंचे।

दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित छात्रावास में वैदिक धर्म शिक्षा

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा पूर्वोत्तर में संचालित छात्रावासों में यज्ञ एवं संध्या करते आदिवासी विद्यार्थी। इन बच्चों की सस्वर संध्या एवं मन्त्रोच्चार की शुद्धि मन्त्रमुग्ध कर देती है। आप इन बच्चों की वीडिया यू–ट्यूब पर देखने के लिए सर्च करे आर्य समाज नागालैंड।

बोकाजान में निर्माणाधीन छात्रावास का निरीक्षण

दयानन्द सेवाश्रम संघ के बोकाजान स्थित आश्रम में प्रतिष्ठित आर्य समाजसेवी, सेवाश्रम संघ के अनन्य सहयोगी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के मन्त्री श्री दीनदयाल गुप्त जी के सहयोग द्वारा निर्माणाधीन बाल छात्रावास

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के निर्वाचन सम्बन्धी

रजिस्ट्रार के आदेश 23 जून, 2013 पर इलाहाबाद हाई कोर्ट ने लगाई रोक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी द्वारा लगाए गए प्रार्थना पत्र पर हुआ आदेश

HIGH COURT OF JUDICATURE AT ALLAHABAD
Case :- WRIT - C No. - 34934 of 2013
Petitioner :- Dharmeshwara Nand And Another
Respondent :- Registrar, Firms, Societies & Chits & 3 Others
Order Date :- 9.7.2013 by **Tarun Agarwala, J.**

यह आदेश कोर्ट की वैबसाइट
www.allahabadhighcourt.in पर उपलब्ध है

आर्य शहीद महाशय राजपाल के समर्पित पुत्र : स्व. श्री विश्वनाथ के संस्मरण

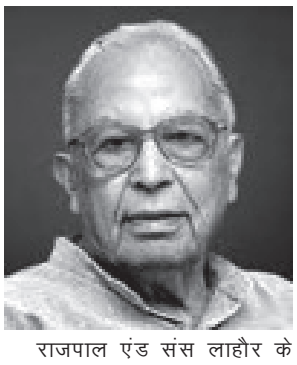

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

राजपाल एंड संस लाहौर के प्रकाशकों से मेरा परिचय किशोरावस्था समाप्त होते–होते हो गया था। यह देश विभाजन से पूर्व का समय था। राजपाल लाहौर ने महात्मा नारायण स्वामी की उपदेशमाला 'अमृतवर्षा' के नाम से छापी। उनका छपाया 'पुष्पांजलि' भजन संग्रह आकर्षक कवर का आज भी संस्करण है। जब मैं ने सवा रुपये में पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय के दार्शनिक ग्रन्थ 'आई एंड माई गोड' का स्वामी वेदानन्द तीर्थ कृत हिन्दी अनुवाद 'मैं और मेरा भगवान्' खरीदा तो पता लगा कि इसे राजपाल लाहौर ने ही प्रकाशित किया है।

जब 1947 में विश्वनाथ जी लहौर से अपना कारोबार समेटकर दिल्ली आए तब वे 27 वर्ष के युवा थे। वह दिन और आज का दिन 'राजपाल एंड संस' न केवल हिन्दी का अपितु भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन गृह बन गया है। राजपाल एंड संस ने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी तथा पंजाबी चार भाषाओं में ग्रन्थ प्रकाशित किए हैं। 93 वर्षीय विश्वनाथ के निधन के साथ साहित्य प्रकाशन का एक युग समाप्त हो गया है।

मैं चंडीगढ़ में दयानन्द शोध पंजाब विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पद पर था। एक दिन सवेरे–सवेरे देखता हूं कि विश्वनाथ जी 15वें सेक्टर स्थित मेरे निवास पर भेंट हेतु आ गए। मैंने उनसे निवेदन किया कि यदि वे मुझे आदिष्ट करते तो मैं स्वयं उनसे मिलने डी.ए.वी. गैस्ट हाउस आ जाता। यह उनका बड़प्पन था कि वे एक नगण्य लेखक को इतना सम्मान देते थे। अर्थशास्त्र में एम.ए. विश्वनाथ जी स्वयं सफल लेखक तथा सुप्रसिद्ध कवि थे। डी.ए.वी. प्रबन्ध समिति के वर्षों तक उप प्रधान तो वे रहे ही इस संस्था के प्रकाशन विभाग को उन्होंने नया आयाम दिया। आर्यजगत् का सफल सम्पादन उन्होंने कई वर्षों तक किया तथा अंग्रेजी मासिक 'आर्यन हैरिटेज' का सम्पादन वे इस पत्र के जन्मकाल से ही करते रहे।

मेरा जब–जब दिल्ली आना होता मैं मदरसा रोड कश्मीरीगेट स्थिति राजपाल एंड संस के कार्यालय में जाकर उनसे भेंट अवश्य करता। अस्वस्थता वश विगत दो वर्षों से मेरा दिल्ली जाना बन्द रहा तो इस बात का सर्वाधिक खेद रहा कि विश्वनाथ जी के प्रेरणाप्रद वार्तालाप का लाभ न ले पाना मेरी कितनी बड़ी क्षति थी। वे स्वयं जहां लेखकों को प्रोत्साहित करते, वहां स्वयं ग्रन्थ रचना के लिए समय निकाल लेते थे। प्रार्थना सुमन, महाराणा प्रताप तथा महापुरुषों के संस्करण के बाद भी उनके अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। श्री विश्वनाथ जी ने मौलाना जलालुद्दीन रुमी के दार्शनिक काव्य का सफल रुपान्तरण किया है। इससे पता चलता है कि वे इस दर्शनिक कवि के आध्यात्मिक चिन्तन को उन्होंने हिन्दी काव्य की मुक्तक शैली में कितनी सफलता से उतारा है।

कुछ वर्ष पूर्व जब डी.ए.वी. प्रकाशन ने चारों वेदों का पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार कृत हिन्दी भाष्य प्रकाशित कराया तो चारों वेदों की परिचयात्मक भूमिका लिखने के लिए उन्होंने इन पंक्तियों के लेखक को आदेश दिया। इस प्रकाशन के द्वारा हिन्दी में लोकोपयोगी चतुर्वेद भाष्य के पाठकों के लिए सुलभ कर दिया गया। श्री विश्वनाथ जी से मेरा यथा व्यवहार लगभग तीस वर्षों की अवधि तक विस्तृत है। उनकी यह विशेषता थी कि कोई भी उन्हें भेजा गया पत्र अनुत्तरित नहीं रहता। उनके द्वारा मेरी लिखी डी.ए.वी. तथा प्रादेशिक सभा द्वारा प्रकाशित हुई हैं– जर्मनी के संस्कृत विद्वान्, आर्यसमाज : कल और आज, आर्यसमाज के दस कालजयी ग्रन्थ, आर्यसमाज के वेद सेवक विद्वान् आदि।

उनका अन्तिम पत्र मेरे नाम 3 जून का है। इसमें उन्होंने अपनी नई काव्य कृतियों की प्रतिलिपियां भेजीं। उनके काव्य संग्रह 'उत्तरा' में उनकी अधिकांश कविताएं संग्रहीत हैं निश्चय ही विश्वनाथ जी के निधन से न केवल आर्यसमाज अपितु समस्त हिन्दी जगत् एवं प्रकाशन व्यवसाय की अपूर्णीय क्षति हुई है। उनकी स्मृति में सश्रद्ध प्रणाम।

3/5, शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

पृष्ठ 3 का शेष

का जीवन व्यतीत करने लगे। घर पर गो–सेवा और बाहर गरीबों की सेवा यही आपकी दिनचर्या हो गई। धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में आर्य समाज को ही पिता जी एकमात्र प्राण और स्फूर्ति देने वाली संस्था मानते थे। बालक–बालिकाओं की शिक्षा के लिये आर्य समाज की शिक्षा–संस्थाओं को ही चरित्र–निर्माण करने वाली संस्थाएं बता कर सैकड़ों लोगों से उनके बच्चों को उन्होंने गुरुकुलों में भिजवाया। आर्य समाज के महोत्सवों में जाकर पूरा समय वे पंडाल में बैठकर भाषण सुना करते थे। मथुरा–शताब्दी में उन्होंने स्वयं सेवक का कार्य भी किया। अन्याय और अत्याचार को न सहनेवाले व्यक्तियों में आपकी गणना होती थी। थानेदार आदि स्थानीय सरकारी अफसर आपकी बड़ी इज्जत करते थे और किसी हद तक आपसे डरते भी थे कि इनके कस्बे में यदि हमने कोई गलत काम किया तो हमारी शिकायत हो जायेगी। अपनी आयु के अंतिम कुछ वर्ष पिता जी ने अपने सबसे छोटे पुत्र डाक्टर हरिश्चन्द्र के पास तिलहर में व्यतीत किये। आयु के 89 वर्ष पूर्णकर 4 मई 1981 को तिलहर (जिला शाहजहांपुर) में उन्होंने इहलोक लीला संवरण की। उनकी प्रार्थना सभा में ईसाई, मुसलमान, सिख, हिन्दू आदि सब धर्म के लोगों ने उपस्थित होकर अपने–अपने धर्मग्रन्थों का पाठ करके उन्हें श्रद्धांजलि दी। एक घास वाले ने कहा कि पिता जी हमसे गाय के लिए घास–चारा खरीदते थे। कभी मोल–भाव नहीं किया। हमसे कहते थे कि घास घर पर डाल आओ, पैसे पहले ही दे देते थे। पैसे सदा घास के मूल्य से कुछ अधिक ही होते थे।

हमारे पास उनकी पवित्र स्मृति और उनके महान् गुण थाती के रूप में सुरक्षित हैं। संभव है कोई पाठक भी उनके जीवन से कुछ प्रेरणा पा सकें, इसी दृष्टि से इस छोटे से लेख के माध्यम से कुछ झांकियां प्रस्तुत की गई हैं।

प्रस्तुतकर्ता: मनमोहन कुमार आर्य,196 चुक्खूवाला–2, देहरादून (उत्तराखण्ड)–248001
फोन: 09412985121

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस (उ.प्र.)–204104

शिक्षा प्ले ग्रुप से लेकर वेदालंकार/विद्यालंकार (बी.ए.) तक, प्रथमा (8) से लेकर आचार्य (एम.ए.) तक, प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद की, गायन, वादन में प्रभाकर (बी.ए.) तक निःशुल्क शिक्षा। आई.टी.आई. –कोपा (कम्प्यूटर), सिलाई–कटाई ट्रेड की एन.सी.वी.टी. द्वारा मान्य। प्ले ग्रुप से हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी तीनों भाषाएं। प्रातः, सायं यज्ञ, योगासन, जूड़ो, कराटे एवं व्यायाम। दोनों समय दाल, सब्जी, घृत, दूध सहित भोजन व्यय 1000/– मासिक। आवासीय सुविधा एवं सुरक्षा। सुरम्य, प्राकृतिक, रमणीक विस्तृत भूखण्ड में संस्कारवान शिक्षा।

गुरुकुल आगरा–अलीगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 93 पर सासनी–हाथरस के मध्य स्थित है। प्रवेश हेतु सम्पर्क करे–

कमला स्नातिका 09897479919 *डॉ. पवित्रा विद्यालंकार 9212226462* *सविता वेदालंकार 8006340583*

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्थित मकडौली कलां ग्राम में हुआ। उन्होंने महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर से आचार्य एवं वेदवाचस्पति परीक्षा उत्तीर्ण की, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से एम.ए. हिन्दी में उत्तीर्ण करके विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से एम.ए. संस्कृत सर्वाधिक अंकों में उत्तीर्ण कर वहीं से पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त की। इनको देश–विदेश की संस्थाओं से अब तक एक दर्जन से अधिक सम्मान/पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। डॉ. सुरेन्द्र कुमार का आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वानों में एक विशेष स्थान है वे अनेक संस्थाओं के अनेक दायित्वपूर्ण पदों से जुड़े हुए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार समस्त आर्यजगत की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देते हुए आशा करता है कि उनके नेतृत्व में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय नवीनतम ऊचाइयों को प्राप्त करेगा।

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर में

गुरु विरजानन्द दिवस

22 जुलाई यज्ञ : प्रातः 7 बजे

आमन्त्रित विद्वान एवं अतिथिगण

डॉ. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, डॉ. रामप्रकाश, डॉ. महावीर अग्रवाल, श्री सत्यपाल पथिक, श्री सवरण सिंह फिल्लोर, मदल मोहन मित्तल।

– सुखदेवराज, अधिष्ठाता

आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी जिला मधुबनी में आर्य वीर दल बिहार का प्रान्तीय शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल बिहार का प्रान्तीय शिविर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डॉ. स्वामी देवव्रत जी सरस्वती के कुशल मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। शिविर के अन्तिम तीन दिनों के लिए सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी डॉ. उत्तमा यति जी ने भी पधारकर शिविर की शोभा बढ़ाई। पानीपत से डॉ. सुश्रुत आर्य, गुरुकुल सुन्दरपुर से आचार्य सत्यव्रत, गुरुकुल कोलाघाट से आचार्य ब्रह्मदत्त, वरिष्ठ आर्यवीर प्रशिक्षक श्री हरिसिंह जी, श्री राजेश एवं ऋषि उद्यान अजमेर से ब्र. कर्मवीर ने भी आर्यवीरों को प्रशिक्षित किया।

शिविर का उद्घाटन स्वामी देवव्रत जी ने ओ३म् ध्वज फहराकर किया। समापन समारोह में समस्तीपुर रेल मंडल के प्रबन्धक श्री अरुण मलिक जी के मुख्य आतिथ्य में हुआ।

शिविर में बिहार एवं नेपाल से 150 युवक एवं 25 युवतियों ने सात दिनों तक रहकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। समापन समारोह में लगभग पूरे बिहार से काफी संख्या में आर्यजनों ने पधारकर आर्यसमाज की युवा पीढ़ी को आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर आर्यवीरों एवं वीरांगनाओं ने व्यायाम प्रदर्शन के अद्भुत करतब दिखाए। डॉ. स्वामी देवव्रत जी एवं साध्वी उत्तमायति जी ने सभी आर्यवीरों को अपना आशीवार्द प्रदान करते हुए आयोजकों एवं शिविर की व्यवस्थाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। यह शिविर 25 फरवरी से 3 मार्च तक आयोजित हुआ।

– आचार्य सुशील, संचालक आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी

प्रशिक्षण शिविर में उद्बोधन देती साध्वी उत्तमा यति, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती जी एवं यज्ञोपवीत धारण करते शिविरार्थी

चेन्नई में स्त्री आर्यसमाज की स्थापना

वर्षों बाद चेन्नई आर्यसमाज में श्रीमती राजरानी आर्या एवं श्रीमती शोभादेव जी के प्रयत्नों से जून शनिवार को सायं 4 जे डॉ. दुलालचन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ के उपरान्त विधिवत् स्त्री आर्यसमाज की स्थापना की गई। इस कार्य में लगभग 50 माताओं ने भाग लिया। बाबू जयदेव जी के आशीर्वाद के साथ महासचिव एस. डी. नांगिया, माउंट आर्यसमाज के मन्त्री श्री सुधीर, कोषाध्यक्ष श्री अरुण बग्गा, श्री विकास के उद्बोधन तथा सहयोग देने के साथ इसे आगे बढ़ाने की बात कहीं। इस कार्य में माताओं तथा बहनों का पूरा सहयोग रहा, उन्होंने भी अपने विचार रखे।

– दुलालचन्द शास्त्री

आर्यसमाज हुतात्मा नगर, बीदर कनार्टक में

हुतात्मा धर्मप्रकाश जी का 75वां बलिदान दिवस सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति आर्यसमाज हुतात्मा नगर, बसव कल्याण जिला बीदर (कर्नाटक) में दिनांक 8जुलाई को हुतात्मा धर्मप्रकाश जी का 75वाँ बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प्रभातफेरी भी निकाली गई। श्रद्धांजलि सभा कर्नाटक सभा के मन्त्री श्री सुभाष अष्टीकर की अध्यक्षता में हुई जिसमें सर्वश्री सुधाकर शास्त्री, प्रताप सिंह चौहान, बसवराज रामचन्द्र ,करणसिंह गौतम, आचार्य अखिलेश शर्मा (लातूर) एवं क्षेत्रीय विधायक श्री मल्लिकार्जुन एस. खूबा ने पधारकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

– भानुप्रसाद पाण्डे, मन्त्री

आर्यसमाज मन्दिर रेलवे कालोनी का बचाने की मांग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री विनय आर्य ने उत्तर दिल्ली नगर निगम द्वारा निर्माणाधीन तीस हजारी से धौला कुंआ फ्लाई ओवर के अन्तर्गत निर्माण कार्य में आने वाले आर्यसमाज मन्दिर डी.सी.एम. रेलवे कालोनी को बचाने की मांग की है।

श्री आर्य ने कहा कि जिस प्रकार सड़कों के विकास के लिए क्षेत्र के अन्य मन्दिरों को स्थानान्तरित किया जा रहा है, उसी तरह रेलवे कालोनी में अन्यत्र आर्यसमाज मन्दिर को बसाया जाए। उधर आपातकालीन बैठक में डी.सी.एम. रेलवे कालोनी के प्रधान अवतार सिंह राणा व आर्यसमाज मन्दिर के सचिव चन्द्रमोहन आर्य ने रेलवे कालोनी में दूसरा स्थान उपलब्ध कराकर मुख्यमन्त्री, महापौर एवं रेलवे अधिकारियों से धार्मिक सद्भावना की अपील की है।

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी की स्थापना सन् 1956 में हुई थी, तभी से लगातार वहां वैदिक धर्म प्रचार की गतिविधियों एवं समाजसेवा के कार्य संचालित किए जा रहे हैं।

आर्यसमाज राजनगर–2 पालम कालोनी

श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार

9 से 11 अगस्त, 2013

आमन्त्रित विद्वान

महाशय रामनिवास आर्य (हरियाणा)

आचार्य अर्जुनदेव वर्णी (गुडगांव)

सम्पर्क – 9953457522

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज यमुना विहार

ब्लाक बी-1, दिल्ली-53

प्रधान : डॉ. सुबोध कुमार शर्मा
मन्त्री : श्री विश्वास वर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री सत्यप्रकाश गोयल

आर्यसमाज सुशान्त लोक

गुड़गांव (हरियाणा)

प्रधान : श्री विजय सेठ
मन्त्री : श्री सत्यप्रकाश रस्तोगी
कोषाध्यक्ष : श्री भारत सचदेवा

शोक समाचार

डॉ. उमानन्द प्रसाद का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण आस्ट्रेलिया के सदस्य डॉ. उमानन्द प्रसाद जी का रविवार दिनांक 14 जुलाई, 2013 को आस्ट्रेलिया के एडिलेड में कार दुर्घटना में निधन हो गया।

डॉ. उमानन्द आस्ट्रेलिया आने से पहले फिजी सरकार के स्वास्थ्य मन्त्रालय में एक डॉक्टर के रूप में सेवाएं दे रहे थे।

वे आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी द्वारा स्थापित फिजी विश्वविद्यालय में 'उमानन्द प्रसाद स्कूल ऑफ मैडिसन' के संस्थापक डीन थे। उन्होंने विश्वविद्याल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति हेतु 45000 डॉलर तथा मैडिकल स्कूल के विद्यार्थियों के लिए एक लाख डॉलर छात्रवृति हेतु प्रदान किए।

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी के पं. कमलेश आर्य जी ने कहा कि डॉ. प्रसाद सभा एवं फिजी विश्वविद्यालय के इतिहास में अपनी एक अमिट छाप छोड़ गए हैं। उन्होंने युवा पीढ़ी क लिए परोपकार का एक नया मानक स्थापित किया है।

श्री कन्हैयालाल आर्य को पितृशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उप प्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य जी के पूज्य पिता श्री रामचन्द्र आर्य जी का गत दिनों 94 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 13 जुलाई को किया गया, जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, स्थानीय आर्यसमाजों, एवं अनेक राजनैतिक पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। आर्यसमाजी सिद्धान्त एवं वैदिक विचारधारा उन्हें पैत्रक विरासत के रूप में प्राप्त हुई थी, इसी विरासत को उन्होंने अपनी सन्तानों में संस्कार रूप में रोपित किया, जिससे आज वे महर्षि दयानन्द के मिशन एवं आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 जुलाई, 2013 से रविवार 21 जुलाई, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18/ 19 जुलाई, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 जुलाई, 2013

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 दिल्ली के अवसर पर घोषित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2013

डरबन (दक्षिण अफ्रीका)

28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013

भारत से प्रस्थान

छत्रपति शिवाजी हवाई अड्डा मुम्बई से 20 नवम्बर

वापसी : 3 दिसम्बर, 2013 (मुम्बई)

किराया एवं सम्मेलन की विस्तृत सूचना एवं सम्पूर्ण यात्रा विवरण आगामी अंकों में प्रकाशित की जाएगी।

– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

माता कमला आर्या धर्मार्थ ट्रस्ट के सहयोग से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक विनय

मात्र 125/– रुपये

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/–रु. सैकड़ा	मात्र 300/–रु. सैकड़ा

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्त स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर